IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 3, 2022

हिंदी साहित्य में दलित चेतना

Dr.Hasankhan K Kulkarni, Associate Professor
Indira Gandhi Govt. First Grade,Womens College
Sagar-577401, Dist:- Shimoga, Karnatka.

भूमिका :-

सहश्र वर्षों की जाती व्यवस्था मनुष्य के अपने-अपने धर्म प्रचार के प्रयत्न, सामाजिक और भौगोलिक कारणों से हमारे देश में अनेक जातियाँ देखने को मिलती हैं । माना जाता है कि ब्राह्मणों की ही जाति व उपजातियों की संख्या 800 से अधिक है । ब्लूमफ़िल्ड के अनुसार ब्राह्मणों में ही 2000 से अधिक जाति उपजातियाँ हैं । 1901 की जनगणना के अनुसार इनकी संख्या 2378 मानी जाती है।

हमारे भारत में मनुस्मृति के वर्ण भेद नीती के आधार पर नी प्रमुख जातियाँ हैं:- **१) ब्राह्मण २) क्षत्रीय ३) वैश्य ४) शूद्र और दलित** इस प्रकार विभाजित किए गए हैं । 2005 ई. में संपादित एनसैक्लोपिडिया में जातियों के रे में इस प्रकार लिखागया है- **caste "It is prevalent in Hindu society. The four main divisions (varnas) are Brahmins (priests & professionals), kshatriyas (nobles & warriors), vaishyas (farmers & Merchants), Shudra (servants). and A fifth group, the untouchables' (harijan or dalitas)"**[1] शूद्रों में फ़िर अनेक पिछडे जातियाँ मिलते हैं जैसे हरिजन, चमार, गोल्ल, लंबानी, वड्डर, डर, तलवार, वाल्मिकी, कुरुब, काडु कुरुब, किली क्यातर, इत्यादी । उसी प्रकार भारत में भाषाओं का भी आधिक्य है । यहाँ कुल 164 से भी अधिक भाषाएँ भी ोली जाती हैं । संविधान की मान्यता प्राप्त 22 भाषाएँ और अलग-अलग प्रांतों में 100 से भी अधीक भाषाएँ ोली जाती हैं । कर्नाटक के कोरग, कुरब, लंबानी, तुलु, वड्डर, कोंकणी जैसी 42 भाषाओं को 10 हजार से भी कम लोग ोल ने के कारण यह अधिकतर विनाश दरवाजा खटखटा रही हैं । मैसूर में मौजूद भारती भाषाओं की केंद्रीय संशोधन संस्था इनको चाने का काम कर रही है । इतने अधिक जातियँ व भाषाएँ होने पर भी विज्ञान मनुष्य की एक ही जाती मानता है ।

जीव विज्ञान के अनुसार जाती भेद को इस प्रकार माना जाता है जो- **" दो कोई भी नर और मादा प्राणियों का ीच में संतान उत्पत्ति होती है तो वह एक जाती हुई, मानव और वानर का ीच संतान उत्पत्ति नहीं हो सकती तो वह दूसरी जाती हुई"** । विश्व में हर देश के मनुष्य और हर जाती के ीच में संतान उत्पत्ति संभव हो सकती है त तो सचमुच में सारे विश्व के मानवों की एक ही जाती हुई । कीर दास एक जगह पर अपने दोहे में कहते हैं कि -

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 3, 2022

जाती न पूछो साधू की, पूछ लीजिए ज्ञान ।

मोलकरो तरवार का, पडा रहन दीजिए म्यान॥

विश्व में ऐसे विद्वानों के विचारधाराओं को मान्यता देनेवाले लोग कम हैं । फ़िर भी विश्व में जाती के आधार पर लोगों को सुख और दुख की प्राप्ती हो रही है, इसमें दलितों की परिस्थिति बहुत चिंताजनक है ।

दलित विमर्श:-

दलित शब्द का अर्थ पीडित, वंचित, रौंदा गया, शोशित, दु:खी, गरीब आदि होता है । दलित समाज का एक ऐसा आदमी है जिसे अनादि काल से जीवन और समाज में सुधरने का मौका ही नहीं मिला । यह परिस्थिती आज भी वर्ण व्यवस्था के आधार पर जैसे की तैसी बनी हुई है । सब को मालूम है कि भारत में ब्राह्मण शीर्ष स्थान पर हैं, इन में से शूद्र को निम्न स्तर का माना जाता है । शूद्र जाती प्राचीन काल से पददलित व शोषित होति आयी है । स्वातंत्रता के बाद ये लोग शोषण का विरोध करने लगे हैं । मनुवाद (ब्राह्मणवाद) के विरोध में दलितवाद का जन्म हुआ और यह साहित्य के जरिए दलितों को शोषण से बचाने के लिए तथा समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए रात-दिन संघर्ष करने लगा है । यह दलितवाद हजारों सालों से अंधकार में बसे दलित लोगों को शिक्षा, सम्मान उपलब्द कराने का समर्थन करता है ।

इसके अलावा भारत में अनेक जातियों का विकास हुआ है जो जातियाँ इन चार-पाँच प्रमुख वर्णों में बंटे हुए थे वे धीरे-धीरे पथ भ्रष्ट हुए और उच्च वर्ग के स्त्री पुरुषों के अनैतिक संबंधों वैवाहिक संबंधों के कारण मिश्रित वर्ण के होने लगे । अलग-अलग वर्णों के आपस में मिलजाने के कारण अलग-अलग जातियों का उदय हुआ परिणाम स्वरूप उच्च जातियों में विभिन्न और शूद्र में भी शूद्रातीशूद्र जातियाँ बनीं । यहाँ प्रत्येक वर्ण और जातियों पर नीति संहिता भी लागू हो गई है ।

इनके अलावा भरत में सबसे पिछडे और पंचम वर्ण दलित का भी उदय हुआ जो यह तमिल नाडू में दिखाई देने वाली **'वल्लाल'** जाति है । कहा जाता है कि इस जाती के लोग ब्राह्मण और क्षत्रीय युवतीयों के संतान हैं । बाद इन्हों ने अन्य वर्ण के लोगों के साथ वैवाहिक अथवा अनैतिक मेल किया तो अनेक उपजातियाँ बनीं, जैसे वेलार, मसलन, अंतनार, अरसार, वनीगर, आदि अनेक जातियों का उदय हुआ । लेकिन तमिलनाडू के लोगों का कहना है- 'जो आर्यों के

आने के पहले ही द्क्षिण हिंदुस्थान में यह जातियाँ मौजुद थीं और यह आज भी वहाँ देखने को मिलतीं हैं ।

शोषण से चने केलिए दलित विचारधारा, दलितवाद, दलित साहित्य और दलित विमर्ष का जन्म हुआ । इसका आधार बी. आर. अंबेडकर की विचारधारा व मान्यताएँ हैं । उसी प्रकार अंबेडकरजी नारायण गुरू, ज्योतीराव फुले और रामस्वामी पेरियार की विचारधाराओं से प्रभावित हुए थे । इसके साथ-साथ उन पर फ्रांसिसी क्रांती के समानता वाद, बंधुत्व वाद और स्वातंत्रता जैसे विचारधाराओं का गहरा प्रभाव पडा था । इसलिए अंबेडकर तथा लेखक दलित साहित्य के निर्माण व विमर्श के संदर्भ में निम्न सूत्रों पर बल दिए हैं:-

१) स्वाभिमान, स्वावलंबन और स्वउत्पादन को प्रमुखता देना ।

२) शिक्षा प्राप्ती, समाज संगठन करना ।

३) मानवीय अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष करना, इत्यादि ।

दलितों को हिंदू समाज व्यवस्था में बहुत निचला स्थान होने के कारण न्याय, शिक्षा, धर्म, समानता तथा स्वातंत्रता जैसे अधिकारों से वंचित रखा गया था । दलित साहित्य की शुरूआत मराठी साहित्य से मानी जाती है जहाँ दलित **'पैंथर आंदोलन'** के दौरान बडी संख्या में दलित जातियों से आये रचना कारों ने आम जनता तक अपनी भावनाओं, पीडाओं, दु:ख-दर्दो, को अपनी कृतियों द्वार जनता के हृदय तक पहुँचाया है । यहाँ पहले दलित लेखक ही अपने अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाये, बाद में स लोगों ने इनका साथ दिया | माना जाता है कि महाराष्ट्र में इस आंदोलन की शुरुआत हुई । दलित और मराठी साहित्य के बाद यह दलितों की चिंता विशाल हिंदी साहित्य में अधिक मुखर हो उठी और यह एक अलग धारा के रूप में उमड आई । प्रेमचंद, मन्नू भंडारी, धूमिल, महादेवी वर्मा आदि के साहित्य में दलित संवेदना देखने को मिलती है ।

हिंदी कथा साहित्य में दलित संवदना झलक:-

दलितों को केंद्र में रखकर कथा साहित्य में अनेक किताबें लिखि गयीं हैं । मैं उन में से कुछ किताबों का परिचय आप से कराना चाहता हूँ जो दलितों के जीवन का आईना बन चुकी हैं:-

अ) 'महाभोज' उपन्यास (मन्नु भंडारी):-

मन्नु भंडारी के महाभोज उपन्यास में दलितों के शोषण का स्पष्ट चित्रण उभरकर सामने आया है । उपन्यास के आरंभ में ही पिछडि जाती के बिसेसर (बीसू) की हत्या का चित्रण

मिलत□ है । □ीसू हीर□ क□ □ेट□ थ□ पित□ उसे पढ□-लिखाकर □ड□ अफ़सर □नाने के स्वप्न देखरह□ थ□ । 14 वीं कक्ष□ तक पढने के □द्द □ीसू गाँव में गरी□ों पर होनेवाले अन्याय□ को देखकर उनके विरुद्ध आवाज उठाने लगत□ है । सरकारी सहुलियतों क□ उपयोग पाने के लिए हरिजनों और पिछडे वर्ग के लोगों को प्रेरित करने लगत□ है । □ीसू गरी□ मोहल्ले में अपनी ही पठशाल□ खोलत□ है, कभी-कभी दलितों के घर जाकर पडाल□ है । यह स□ देखकर महाजन और जोरावर जैसे पहलवान चुप नहीं □ैठते झूट□ आरोप लगाकर □ीसू को जेल भेज के उसकी मरम्मत कराते हैं । अर्थात रईस लोग पुलिस के हात से उसके हात पैर तुडवाते हैं । गाँव में एक दिन गुंडे लोग रात□ोरात हरिजनों के झोपडियों को आग लग□ देते हैं कई आदमी सहित झोपडियाँ□ जल जाती हैं । □ीसू अपने घाव चंगे होने के □द्द फ़िर गरी□ों की मदद करन□ शुरू करत□ है । गरी□ □स्ती की आगजनी की घटन□ को लेकर दिल्ली सराकार और सुप्रीम कोर्ट में अपील कर असली अपराधी को सज□ दिलवान□ चाहत□ है । उतने में ही गाँव क□ दुष्ट जोरावर पहलवान □ीसू को पडोसी गाँव के दो दुष्ट लोगों को □ुलाकर पुत्तन की चाय की दुकान में चाय में **'जहर'** मिल□ के पिलावादेत□ है । और रात के अंधेरे में लाश को गाँव के □हर एक पुल के पास फ़ेंकव□ देत□ है । पाठकों के दिल को हिल□ देनेवाली ये कहानी दलितों के अन्याय के विरुद्ध अवाज उठाने के लिए प्रेरित करती है ।

आ) 'गोदान' उपन्यास (प्रेमचंद):-

1936 ई. में प्रका□ित प्रेमचंद क□ यह उपन्यास दलित समस्य□ पर आधारित है । यह लेखक क□ अंतिम और श्रेष्ठ उपन्यास भी मान□ जात□ है । इसमें तत्कालीन दलित किसानों, सामा□िक, राजनैतिक, एवं आर्थिक समस्याओं क□ चित्रण हुआ है । इस उपन्यास क□ नायक होरी और नायिक□ धनिय□ है । यह महतो जाती के लोग हैं, जो महारा□्ट्र□ की एक दलित जाती समझी जाती है । इस उपन्यास में यह दिखाने क□ प्रयत्न किय□ गय□ कि दलित जाती क□ होरी और उसक□ परिवार उच्च वर्ग के लोगों के शोषण के शिकार किस प्रकार हुए हैं । गोदान होरी और उसके परिवार के सदस्य धनिय□ रूप□ सोन□ गो□र और झुनिय□ के कष्टों क□ परिचय देत□ है ।

गोदान उपन्यास में भारतीय ग्रामीण सामा□िक जीवन क□ और कृषी संस्कृति क□ सजीव चित्रण भी इस उपन्यास में मिलत□ है । इस में व्यंग्य और विनोद, कसक और वेदन□ विद्रोह और वैराग्य, अनुभव और आदर्श स□ देखने को मिलत□ है ।

इ) 'ठाकुर का कुआँ' कहानी (प्रेमचंद):-

मुंशी प्रेमचंद जी हिंदी के श्रेष्ठ कहानी कार हैं । उन्हों ने भारतीय जन जीवन को निकट से देखा है और उसको अपने कथा साहित्य में लिखने का सफ़ल प्रयत्न भी किया है । ठाकुर का कुआँ कहनी में मानवीयता की मौत हुई है और निर्ममता उठकर नंगी नाचती दीखती है । कहानी के आरंभ में दलित बीमार आदमी जोखू के प्यास का चित्रण हुआ है, गांव के सभी कुँए सूख गए थे केवल ठाकुर के कुएँ में मात्र पानी मौजूद था । जोखू को मालूम था कि ठाकूर बहुत बुरा है पानी भरने नहीं देगा । उसके मना करने पर भी उसकी जोरू गंगी ठाकुर के कुएँ से पानी लाने जाती है । उस समय ठाकुर के आहते में दो-चार बेफ़िक्रे - बेकार लोगों का जमावड़ा भी था, वे जुआ खेलते, बेकार की बातें करते बैठे थे । घर में पानी न होने के कारण गंगी मौके का इंतिजार करते हुए कुएँ के पीछे झुरमुट में जाकर छिपकर बैठती है । सबके जाने के बाद घडा कुएँ के पानी में डूबोकर जल्दी- जल्दी खींचती है, घडा जगत पर रखते समय हाथ से छूट कर कुएँ में गिरजाता है । धडाम से आवाज आते ही ठाकूर- 'कौन है? कौन है?' कहकर चीखते दहाड़ते हुए आजाता है । गंगी गिरते पडते जान बचाकर वहाँ से घर को भाग जाती है और बीमार जोखू को देखती है तो वह गंदला, बदबूदार पानी ही पीरहा था । आगे वह कौनसी बिमारी का शिकार हुआ इसका पता नहीं चलता ।

इस कहानी से मालूम होता है कि ग्रामीण जीवन में जातीयता, ऊँच-नीच, छुआ-छूत की भावना और गरीबों का शोषण किस प्रकार अनादि काल से चलता आ रहा है । अब भी बिना लगाम के घोडे की तरह दौड रहा है । बीमार जोखू को एक घूंट अच्छा पानी पीने केलिए भी नहीं मिल रहा है । बडे लोग छोटे लोगों पर किस प्रकार दब दबाव चलाने आ रहे हैं इसका स्पष्ट चित्रण इस कहानी में देखने को मिलता है ।

ई) 'कफ़न' कहानी (प्रेम चंद):-

कफ़न प्रेम चंद की दलित समाज की समस्या पर आधारित श्रेष्ठ कहानी है । इस कहानी में चमारों की बस्ती का चित्रण हुआ है । एक झोपडी के सामने पिता घीसू और माधव अलाव (चुल्हा) के सामने किसी खेत से चुराये आलू खाने बैठे हैं । दोनों काम चोर, आलसी दिखाई देते हैं अथवा उनको उस गाँव में बुलाकर काम देनेवाले कोई नहीं हैं । वे सप्ताह भर काम नहीं गए, उनको कोई कर्ज नहीं देता फ़िर भी उनको समय पर पैसा कैसे वसूल करना यह कला मालूम है । उस दिन माधव की पत्नी बुधिया प्रसव वेदना से रातभर तडपती रहती है दोनों उसकी चींता नहीं करते । रातभर वह तडप-तडप कर मर जाती है । सुबह होते ही गाँव के जमींदार के पास जाकर गिड-गिडाने पर कफ़न केलिए दो रुपये दे देता है । घीसू और माधव

दोनों कफ़न लाने के □जाय शहर में जाकर खा-पीकर मजा□ कर देते हैं । इस □□र लोग ही फ़िर चंद□ इक्कट्ट□ कर के खुद कफ़न लाते हैं, उनके हाथ□ में पैसे देने की हिम्मत नहीं करते । कोई लकडी, कोई तेल, कोई कपड□ लाकर अंत्य संस्कार कर देते हैं । इनकी ऐसी हालत के लिए कई कारण हो सकते हैं - एक तो समाज के लोग इनको देखने की दृष्ठी, दूसर□ कम मजदूरी ज्याद□ काम देन□, तीसर□ हिंदू समाज की वर्ण भेद नीती, चौथ□ इनक□ अशिक्षत होन□ आदी ।

अलोचकों ने इस कहानी को लेकर यहाँ□ कई प्रश्न खडे करदिये हैं जो प्रेमचंद को दलित विरोधी मानते हैं जो कि प्रेमचंद सवर्णी थे चमारों को □दनाम करन□ चाहते थे इसलिए कहानी के आरंभ में लिखे हैं कि "**चमारों का कुनु□ा था और वह सार□ गाँव में □दनाम । घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम । माधव इतना काम चोर था कि आध घंट□ काम करता तो घंट□ भर चिलम पीता**"[2] । और दूसरी आपत्ति यह उठाये हैं कि '□ुधिय□ गाँव के जमींदार लौंडे से गर्भवती हुई थी जो खेत में वह □ुधिय□ के साथ □लत्कार किय□ थ□ इस □ात को लेखक अपने दिलमें छिपाए हैं । घीसू और माधव □ुधिय□ के होनेवाले अवैध संतान को लेकर लड़तन□ ही विद्रोह कर सके थे कि 'जमींदर के □च्चे को अपन□ □च्च□ नहीं कहेंगे' वे दूसरे के □च्चे को अपने उपर थोप लेन□ नहीं चाहते थे इसी कारण वे दोनों □ुधिय□ और उसके पेट के □च्चे को □चाने नहीं जाते । इस असलियत क□ चित्रण प्रेमचंद कहीं भी नहीं करते । कुछ भी हो यहाँ□ इस कहानी में दलितों क□ शोषण ही दिखाई देत□ है ।

३) पूस की रात कहानी (प्रेम चंद):-

पूस की रात कहानी में गरी□ किसान हल्कू क□ दयनीय चित्रण अंकित हुआ है नाम से ही मालूम होत□ है कि हल्कू एक दलित आदमी है । यह किसान कर्ज के □ोझ से द□गय□ है । गाँवों में महाजन एक रूपय देकर दो रूपये वसूल करते हैं दलित गरी□ किसान सूद क□ पैस□ चुकाते ही रहजाते हैं । कहानी के आरंभ में ही हल्कू कर्जदार सहन□ के भय से थर-थर कांपते हुए अपनी पत्नि मुन्नी से कहत□ है -" **सहना आया है, लाओ, जो रूपय□ रख□ हैं, उस□ द□ दूँ किसी तरह गला तो छूट□**"[3] । मुन्नी पहले मजदूरी करके कमाये हुए तीन रूपये देने मान□ करती है, वह ठंड के दिनों में खेत की रक्ष□ करने केलिए पति को कं□ल दिलान□ चाहती थी । लेकिन पती की गिड-गिड□ कर मांगने पर पैसे निकालकर दे देती है । आगे ठंड के दिनों में खेत की फ़सल रक्ष□ करने में हल्कू विफ़ल होकर □□द्ध होजात है । हल्कू और मुनी कूली-मजदूरी करके जीने मज□ूर हो जाते हैं ।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

निष्कर्ष के तौर पर हम कहसकते हैं कि 'दलित स□हित्य' रूपी आईने में झां□कने पर दलित और शोषित सम□ज की स्थिति, उनक□ रूप-स्वरूप स्पष्ट दिख□ई देत□ है । फ़िरभी स्व□तंत्रत□ के □□द एक हद तक इस पिछडे वर्ग स्थिती में सूध□र होत□ आय□ है । दलितों को क□नूनी सुरक्ष□ शिक्ष□ नौकरियाँ□ आदि में आरक्षण प्र□प्त हो रह□ है वे लोग भी इसक□ भरपूर फ़□यद□ उठ□रहे हैं । सम□ज में स□ल म□नव नि□ल लोगों पर दय□ की एक दृष्टि रखे तो हम□र□ सम□ज **'राम राज्य'** होने में कोई संदेह नहीं है ।

संदर्भ:- 1) फ़िलिप्स एनसैक्लोपिडिय□ सं. जोअन्न□ पोट्ट्स वर्ष- 2005 पृष्ठ संख्य□ 203
2) कथ□सा□ल सं. कुम□र कृष्ण वर्ष- 2010 पृष्ठ संख्य□7
3) कथ□ कुसुम सं. संतोषकुम□र चतुर्वेदी वर्ष- 2012 पृष्ठ संख्य□ 11

----------X----------X----------X----------